

किशोरों के आत्म-सम्मान और व्यक्तित्व विकास पर माता-पिता-बच्चे के संबंधों का प्रभाव

प्रीति पंकज¹, राजेश श्रीवास्तव²

^{1,2}शिक्षा विभागए साई नाथ विश्वविद्यालयए झारखंड

सार

यह अध्ययन किशोरों के व्यक्तित्व और आत्म-सम्मान के विकास पर माता-पिता-बच्चे के संबंधों के प्रभाव का अन्वेषण करता है। 10 से 19 वर्ष की आयु के माता-पिता और बच्चों सहित 160 प्रतिभागियों के नमूने का उपयोग करते हुए, SPSS में पियर्सन की उत्पाद-आघूर्ण विधि का उपयोग करके सहसंबंधों का विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष कुछ व्यक्तित्व लक्षणों और माता-पिता-बच्चे की अंतःक्रियाओं के बीच महत्वपूर्ण संबंधों को प्रकट करते हैं, जैसे कि विक्षिप्तता और कर्तव्यनिष्ठा के बीच नकारात्मक संबंध और विक्षिप्तता और संघर्ष के बीच सकारात्मक संबंध। इसके अतिरिक्त, कर्तव्यनिष्ठा और विक्षिप्तता जैसे लक्षण बहिर्मुखता के साथ संबंध प्रदर्शित करते हैं, जबकि सहमति निर्भरता के साथ सकारात्मक रूप से और विक्षिप्तता के साथ नकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित होती है। उल्लेखनीय रूप से, संघर्ष और माता-पिता-बच्चे के संबंधों के पहलू जैसे निर्भरता और निकटता, आत्म-सम्मान के साथ सकारात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। ये परिणाम किशोर व्यक्तित्व और आत्म-सम्मान के निर्माण पर माता-पिता-बच्चे के संबंधों के महत्वपूर्ण प्रभाव को रेखांकित करते हैं।

मुख्य शब्द: व्यक्तित्व, आत्म-सम्मान, अभिभावक-बाल संबंध

परिचय

1.1 अभिभावक-बाल संबंध

माता-पिता और बच्चों के बीच का संबंध आत्म-सम्मान और व्यक्तित्व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। सकारात्मक बातचीत सुरक्षा और आत्म-सम्मान की भावना को बढ़ावा देती है, जबकि नकारात्मक बातचीत भावनात्मक कठिनाइयों का कारण बनती है। इन प्रभावों की खोज से पारिवारिक गतिशीलता और युवाओं तथा उनके जीवन के प्रारंभिक वर्षों के बीच जटिल अंतःक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। संचार शैली, भावनात्मक समर्थन और माता-पिता और युवाओं के बीच सुरक्षित संबंध बनाने जैसे कारक इन परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सकारात्मक अभिभावक-बाल संबंधों को समझने और उन्हें बढ़ावा देने से युवाओं, उनके जीवन और उनके समग्र मनोवैज्ञानिक विकास को दीर्घकालिक लाभ हो सकते हैं।

मानव विकास का मूल परिवार की गतिशीलता में बुना हुआ है, जहाँ अभिभावक-बाल संबंध आधारशिला हैं जो लोगों और उनके जीवन के तरीकों को आकार देते हैं। मानव विकास को प्रभावित करने वाले कई कारकों में, किशोरावस्था के दौरान माता-पिता के मार्गदर्शन के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता। आत्म-खोज और पहचान निर्माण की अशांत यात्रा से युक्त, किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण समय होता है जब पारिवारिक गतिशीलता व्यक्ति के आत्म-सम्मान और उसके भविष्य के पहलुओं को आकार दे सकती है।

किशोरावस्था में सकारात्मक अभिभावक-बाल संबंधों का महत्व भावनात्मक कल्याण और व्यक्तिगत विकास के लिए एक स्थिर आधार प्रदान करने की उनकी क्षमता में निहित है। बातचीत की गुणवत्ता, संचार पैटर्न और परिवार की भावनात्मक स्थिति किशोरों के अपने बारे में कैसा महसूस करते हैं और पहचान के विकास की जटिलताओं से कैसे निपटते हैं, इस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। ये अभिभावक-बाल संपर्क समर्थन, मार्गदर्शन और अनुशासन के संयोजन के कारण संवेदनशील हो सकते हैं जो आत्म-सम्मान और व्यक्तिगत परिपक्वता के नाटक के लिए मंच तैयार करते हैं।

1.2 आत्म-सम्मान

एक बच्चे का विकास उसके माता-पिता के बीच गतिशील अंतर्क्रिया और आत्म-मूल्य की भावना से बहुत प्रभावित होता है। किसी व्यक्ति के मूल्य और क्षमता, या आत्म-सम्मान का व्यक्तिपरक मूल्यांकन, उसके पूरे जीवनकाल में उसके व्यवहार, संबंधों और भावनात्मक स्वास्थ्य को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण होता है। माता-पिता-बच्चे के संबंध के ढांचे में, बच्चे के स्वस्थ आत्म-सम्मान का निर्माण भविष्य में उनके सामान्य विकास और सफलता के लिए महत्वपूर्ण और अनिवार्य है।

व्यक्तिगत गौरव मानसिक स्वास्थ्य का एक अनिवार्य घटक है, आत्म-सम्मान एक आंतरिक दिशासूचक के रूप में कार्य करता है जो हमारे दृष्टिकोण, कार्यों और सामान्य कल्याण को निर्देशित करता है। इसमें व्यक्ति द्वारा अपने मूल्य और क्षमता का व्यक्तिपरक मूल्यांकन शामिल होता है, जिसमें योग्यता, महत्व और समुदाय की भावनाएँ शामिल हैं (शापिरो एट अल., 2006)। उच्च आत्म-सम्मान वाले लोग आमतौर पर आनंद के उच्च स्तर, तनाव से निपटने के बेहतर कौशल और उद्देश्य की स्पष्ट समझ का अनुभव करते हैं (बॉमिस्टर एट अल., 1993)। दूसरी ओर, कम आत्म-सम्मान के परिणामस्वरूप चिंता, निराशा और सकारात्मक संबंध स्थापित करने में परेशानी हो सकती है (ब्राउन एट अल., 1998)। अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए यह समझना आवश्यक है कि आत्म-सम्मान कैसे बढ़ता है और कैसे बनाए रखा जाता है, खासकर चुनौतीपूर्ण सामाजिक परिवेश में काम करने वाले युवा वयस्कों के लिए।

मजबूत आत्म-सम्मान वाले बच्चों में जीवन की बाधाओं का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए आवश्यक लचीलापन और आत्मविश्वास होता है। जब बच्चों को अपने माता-पिता से मान्यता, स्वीकृति और समर्थन मिलता है, तो वे आत्म-सम्मान की एक अच्छी भावना को आत्मसात कर लेते हैं। इससे उन्हें गतिविधियों के प्रति आशावादी दृष्टिकोण अपनाने, असफलताओं के बावजूद डटे रहने और दूसरों के साथ सुरक्षित संबंध बनाने में मदद मिलती है। दूसरी ओर, माता-पिता और बच्चों के बीच देखभाल और प्रोत्साहन भरे संवादों की कमी बच्चों के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचा सकती है और उन्हें भावनात्मक पीड़ा, अपर्याप्तता की भावना और आत्म-संदेह के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकती है।

1.2 व्यक्तित्व

दार्शनिक और वैज्ञानिक सहस्राब्दियों से व्यक्तित्व के प्रति आकर्षित रहे हैं, क्योंकि यह लक्षणों का वह जटिल और कालातीत संयोजन है जो हमें वह बनाता है जो हम हैं। इसमें विचारों, भावनाओं, कार्यों और सामाजिक व्यवहारों का विशिष्ट सम्मिश्रण शामिल है जो हममें से प्रत्येक को अद्वितीय बनाता है (मैकक्रे और कोस्टा, 2003)। अपने व्यक्तित्व को समझना हमारी विरासत में मिली प्रवृत्तियों, प्रारंभिक अनुभवों, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से बने एक जटिल ताने-बाने को सुलझाने जैसा है। हालाँकि कोई एक व्यापक रूप से स्वीकृत सिद्धांत नहीं है, फिर भी कई प्रसिद्ध दृष्टिकोण विकसित हुए हैं, जिनमें से प्रत्येक इस जटिल अवधारणा के एक अलग पहलू पर प्रकाश डालता है।

लक्षणों का स्थायी प्रभाव: लक्षण सिद्धांत तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। ये एक बड़ी श्रेणी हैं जिनमें कई अलग-अलग दृष्टिकोण शामिल हैं। कोस्टा और मैकक्रे (1992) द्वारा विकसित, पाँच-कारक मॉडल (OCEI) सबसे प्रसिद्ध मॉडलों में से एक है। अनुभव के प्रति खुलापन, कर्तव्यनिष्ठा, बहिर्मुखता, सहमति और विक्षिप्तता इस मॉडल द्वारा सुझाए गए पाँच बुनियादी व्यक्तित्व लक्षण हैं। ये लक्षण बुनियादी निर्माण खंडों के रूप में कार्य करते हैं और विभिन्न तरीकों से मिलकर व्यक्तिगत व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। जैंग एट अल. (1996) के शोध के अनुसार, ये लक्षण जीवन भर उल्लेखनीय रूप से स्थिर रहते हैं, जो दर्शाता है कि इनका हमारे निर्णयों और व्यवहारों पर स्थायी प्रभाव पड़ता है।

1.4 “बाल संबंध”, “आत्मसम्मान” और “व्यक्तित्व” के बीच संबंध

किशोरावस्था के आत्म-सम्मान और व्यक्तित्व तथा माता-पिता-बच्चे के बंधन के बीच मौजूद जटिल और बहुआयामी संबंध किशोर विकास के कई क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। दो वयस्कों के बीच यह परस्पर क्रिया किशोरों के स्वयं के प्रति दृष्टिकोण, दूसरों के साथ संबंधों और यौवन की कठिनाइयों से निपटने के तरीके को बहुत प्रभावित करती है।

1. लगाव सिद्धांत: लगाव सिद्धांत यह समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है कि माता-पिता और बच्चों के बीच का बंधन किशोरों के विकास को कैसे प्रभावित करता है। जो किशोर सुरक्षित लगाव का अनुभव करते हैं, जो गर्मजोशी, संवेदनशीलता और नियमित देखभाल से परिभाषित होता है, वे अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय महसूस करते हैं।

2. पालन-पोषण की शैलियाँ: किशोरों के आत्म-सम्मान और व्यक्तित्व विकास पर कई पालन-पोषण दर्शनों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जिनमें सत्तावादी, अनुमोदक, उपेक्षापूर्ण और अधिकारपूर्ण शामिल हैं। अच्छा पालन-पोषण बढ़े हुए आत्म-सम्मान और स्वायत्तता, लचीलापन और सामाजिक क्षमता जैसे सुसमायोजित व्यक्तित्व लक्षणों से जुड़ा है।

3. माता-पिता का आदर्शिकरण और समाजीकरण: किशोरों के विचार, दृष्टिकोण और व्यवहार उनके माता-पिता द्वारा आकार दिए जाते हैं, जो उनके मुख्य आदर्श और समाजीकरण सूत्रधार के रूप में कार्य करते हैं। किशोर बातचीत और अवलोकन के माध्यम से अपने माता-पिता के दृष्टिकोण और मूल्यों को आत्मसात करते हैं, जो इस बात को प्रभावित करता है कि वे एक व्यक्ति के रूप में कैसे विकसित होते हैं और वे खुद को कैसे देखते हैं।

4. सांस्कृतिक और प्रासंगिक प्रभाव: सामाजिक-आर्थिक चर, सांस्कृतिक मानदंड और व्यापक प्रासंगिक प्रभाव, सभी माता-पिता और बच्चों तथा किशोरों के आत्म-सम्मान और व्यक्तित्व के बीच संबंध में मध्यस्थ भूमिका निभाते हैं। माता-पिता और बच्चों के बीच की बातचीत और अपेक्षाएँ स्वायत्तता, सामूहिकता और लैंगिक भूमिकाओं से जुड़े सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित होती हैं।

5. माता-पिता का समर्थन और प्रोत्साहन: समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान करके, माता-पिता किशोरों के आत्म-सम्मान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब माता-पिता अपने किशोर बच्चों की उपलब्धियों, प्रयासों और विशेषताओं को पहचानते और उनकी सराहना करते हैं, तो उनकी क्षमता और आत्म-मूल्य की सकारात्मक भावनाएँ प्रबल होती हैं।

किशोर आत्म-सम्मान और व्यक्तित्व विकास माता-पिता और बच्चों के बीच के बंधन से काफी प्रभावित होते हैं। माता-पिता अपने किशोरों को एक प्रेमपूर्ण और देखभाल भरा वातावरण प्रदान करके, यौवन का डटकर सामना करने के लिए तैयार कर सकते हैं। इससे उन्हें बड़े होने पर स्वस्थ भावनात्मक आदतें और सार्थक संबंध विकसित करने में मदद मिलेगी। आत्मविश्वासी और आत्मविश्वासी लोगों की एक पीढ़ी को बढ़ावा देने और सकारात्मक युवा विकास को प्रोत्साहित करने के लिए इस बातचीत की जटिलताओं को समझना और उन पर ध्यान देना आवश्यक है।

उद्देश्य

किशोरों के आत्म-सम्मान और व्यक्तित्व विकास पर माता-पिता और बच्चों के संबंधों के प्रभाव की जाँच करना।
कार्यप्रणाली

अध्ययन के प्रतिभागी

एक उद्देश्यपूर्ण सुविधा स्नोबॉल नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके 160 प्रतिभागियों, 80 अभिभावकों और 80 बच्चों (महिला और पुरुष दोनों) का चयन किया गया, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे दिल्ली-एनसीआर क्षेत्रों के 10 से 19 वर्ष की आयु के किशोर हैं।

डेटा संग्रहण उपकरण

इस अध्ययन में आँकड़े निम्नलिखित पैमानों की सहायता से प्राप्त किए गए थे: बाल संबंध पैमाना, रोसेनबर्ग आत्म-सम्मान पैमाना, और नव-आत्म-सम्मान व्यक्तित्व सूची।

आँकड़ा संग्रहण प्रक्रिया

अध्ययन में प्रयुक्त तीन प्राथमिक उपकरण थे: बाल संबंध पैमाना, रोसेनबर्ग आत्म-सम्मान पैमाना, और नव-आत्म-सम्मान व्यक्तित्व सूची। प्रतिभागियों ने स्वेच्छा से तीनों प्रश्नावली भरें और फिर उनके उत्तरों का SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग करके सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। इस प्रक्रिया ने सूचित सहमति सुनिश्चित की और पूरे अध्ययन के दौरान प्रतिभागी के निजता के अधिकार को बरकरार रखा।

बाल संबंध

बाल-अभिभावक संबंध पैमाना (CPRS) बाल विकास और मनोविज्ञान में आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला एक उपकरण है जो बच्चों और उनके माता-पिता या अन्य प्राथमिक देखभालकर्ताओं के बीच संबंधों की मज़बूती का आकलन करता है। यह माता-पिता-बच्चे के संबंध के अन्य पहलुओं के अलावा, अंतरंगता, संचार और संघर्ष समाधान का भी आकलन करता है।

विश्वसनीयता

विश्वसनीयता अध्ययनों द्वारा कई नमूनों और प्रशासनों में मापन में उच्च विश्वसनीयता और एकरूपता प्रदर्शित की गई है, जिन्होंने ब्त् के लिए लगातार उत्कृष्ट आंतरिक एकरूपता प्रदर्शित की है, जिसमें क्रोनबाक के अल्फा गुणांक अक्सर 0.70 से 0.90 के बीच होते हैं। इसके अतिरिक्त, अक्सर 0.80 से ऊपर के, मज़बूत परीक्षण-पुनःपरीक्षण विश्वसनीयता गुणांक दर्शाते हैं कि स्कोर समय के साथ एकसमान रहते हैं।

रोसेनबर्ग आत्म-सम्मान पैमाना

आत्म-सम्मान का आकलन करने के लिए एक लोकप्रिय मनोवैज्ञानिक उपकरण रोसेनबर्ग आत्म-सम्मान पैमाना (तैमै) है, जो किसी व्यक्ति के अपने मूल्य और महत्ता के समग्र व्यक्तिपरक आकलन का आकलन करता है।

विश्वसनीयता

विश्वसनीयता परीक्षणों द्वारा तैमै के लिए प्रबल आंतरिक संगति लगातार दर्शाई गई है; तैमै के लिए क्रोनबाक के अल्फा गुणांक विभिन्न समूहों और परिस्थितियों में सामान्यतः 0.80 से 0.90 के बीच होते हैं। इससे पता चलता है कि पैमाने के आइटम लगातार आत्म-सम्मान की एक ही अंतर्निहित संरचना को मापते हैं और अच्छी मापन विश्वसनीयता और संगति प्रदर्शित करते हैं।

नियो फाइव फैक्टर व्यक्तित्व सूची

व्यक्तित्व का फाइव-फैक्टर मॉडल, जिसे बिग फाइव व्यक्तित्व लक्षण कहा जाता है, व्यापक रूप से प्रयुक्त नियो फाइव-फैक्टर सूची (छम्-थप्), एक मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन उपकरण का उपयोग करके मापा जाता है। नियो-थप् के पाँच घटक हैं: विक्षिप्तता, बहिर्मुखता, सहमति, कर्तव्यनिष्ठा और अनुभव के प्रति खुलापन।

विश्वसनीयता

पाँच व्यक्तित्व आयामों के लिए क्रोनबाक के अल्फा गुणांक सामान्यतः 0.70 से 0.90 के बीच होने के कारण, विश्वसनीयता परीक्षणों ने बार-बार नियो-थप् के लिए अच्छी आंतरिक संगति प्रदर्शित की है। परिणामस्वरूप, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पैमाने के आइटम अपनी उच्च विश्वसनीयता और स्थिरता के कारण प्रत्येक व्यक्तित्व विशेषता का सटीक मूल्यांकन करते हैं।

सांख्यिकीय विश्लेषण

डेटा का विश्लेषण करने के लिए पियर्सन सहसंबंध का उपयोग किया गया, और चरों के बीच संबंधों की जाँच के लिए SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया।

परिणाम और चर्चा

तालिका 01. अभिभावक-संतान संबंध और व्यक्तित्व के बीच सहसंबंध

| | विक्षिप्तता I | बहिर्मुखता I | खुलापन न | सहमतता I | कर्तव्यनिष्ठा I | संघर्ष | निकटता I | निर्भरता I |
|---------------|------------------|-----------------|-------------|-------------|--------------------|--------|-------------|---------------|
| विक्षिप्तता | 1 | | | | | | | |
| बहिर्मुखता | - | 1 | | | | | | |
| | 0.29035 | | | | | | | |
| | 9257 | | | | | | | |
| खुलापन | 0.08187 | 0.01132 | 1 | | | | | |
| | 0079 | 8918 | | | | | | |
| सहमतता | - | 0.17774 | - | 1 | | | | |
| | 0.47238 | 083 | 0.00659 | | | | | |
| | 5958 | | 9093 | | | | | |
| कर्तव्यनिष्ठा | - | 0.36551 | - | 0.288346 | 1 | | | |
| | 0.48544 | 7451 | 0.00173 | 816 | | | | |
| | 0233 | | 6169 | | | | | |
| संघर्ष | 0.10848 | - | - | 0.023991 | 0.0046221 | 1 | | |
| | 9536 | 0.00112 | 0.17414 | 544 | 6 | | | |
| | | 5875 | 5419 | | 8 | | | |
| निकटता | - | 0.09053 | - | - | 0.2849263 | 0.1469 | 1 | |
| | 0.14228 | 617 | 0.25207 | 0.005321 | 1 | 8 | | |
| | 0077 | | 1742 | 488 | | 0304 | | |
| निर्भरता | - | 0.08570 | - | 0.044729 | 0.2412952 | 0.3354 | 0.475 | 1 |
| | 0.00175 | 672 | 0.07605 | 054 | 8 | 3 | | |
| | 8794 | | 4369 | | 3 | 8173 | 382 | |

इन सहसंबंधों की व्याख्या व्यक्तित्व लक्षणों और पारस्परिक गतिशीलता के बीच जटिल अंतर्संबंध पर प्रकाश डालती है। विक्षिप्तता एक केंद्रीय कारक के रूप में उभरती है, जो कर्तव्यनिष्ठा के साथ नकारात्मक जुड़ाव और संघर्षों के साथ सकारात्मक संबंध दर्शाती है। दूसरी ओर, बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा के साथ सकारात्मक और विक्षिप्तता के साथ नकारात्मक रूप से सहसंबंधित है, जो मिलनसारिता और विश्वसनीयता की प्रवृत्ति का संकेत देती है। सहमति निर्भरता के साथ संबंध और विक्षिप्तता के साथ विपरीतता प्रदर्शित करती है, जो मिलनसारिता और अन्योन्याश्रयता की प्रवृत्ति का संकेत देती है। कर्तव्यनिष्ठा एक महत्वपूर्ण गुण के रूप में उभरती है, जो बहिर्मुखता के साथ सकारात्मक रूप से और विक्षिप्तता के साथ नकारात्मक रूप से जुड़ी है, जो व्यवहार और सामाजिक अंतःक्रियाओं को आकार देने में इसकी भूमिका को उजागर करती है। कुल मिलाकर, ये निष्कर्ष मानव व्यक्तित्व के जटिल ताने-बाने और पारस्परिक संबंधों पर इसके प्रभावों के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

तालिका 02. अभिभावक-संतान संबंध और आत्म-सम्मान के बीच सहसंबंध।

| | संघर्ष | निकटता | निर्भरता | आत्म-सम्मान |
|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| संघर्ष | 1 | | | |
| निकटता | 0.146980304 | 1 | | |
| निर्भरता | 0.335438173 | 0.475381728 | 1 | |
| आत्म-सम्मान | 0.094835522 | 0.102042005 | 0.168317873 | 1 |

संघर्ष, निकटता, निर्भरता और आत्म-सम्मान के बीच सहसंबंध, पारस्परिक गतिशीलता और आत्म-धारणा के बीच जटिल अंतर्संबंध के बारे में रोचक जानकारी प्रदान करते हैं। जहाँ संघर्ष आत्म-सम्मान के साथ एक मामूली सकारात्मक जुड़ाव प्रदर्शित करते हैं, जो संघर्ष समाधान के माध्यम से सशक्तिकरण की संभावना का संकेत देते हैं, वहीं निकटता और निर्भरता भी आत्म-सम्मान के साथ सकारात्मक संबंध प्रदर्शित करते हैं, जो आत्मविश्वास बढ़ाने में पारस्परिक संबंधों की सहायक भूमिका को दर्शाता है। ये निष्कर्ष सामूहिक रूप से सुझाव देते हैं कि आत्म-सम्मान संघर्ष समाधान के अनुभवों, दूसरों के प्रति निकटता की भावनाओं और पारस्परिक सहायता नेटवर्क पर निर्भरता से प्रभावित हो सकता है। हालाँकि, अपेक्षाकृत कमज़ोर जुड़ाव यह दर्शाते हैं कि आत्म-सम्मान इन पारस्परिक गतिशीलता से परे असंख्य अन्य कारकों द्वारा आकार लेता है।

निष्कर्ष

सहसंबंध विश्लेषण व्यक्तित्व लक्षणों, आत्म-सम्मान और अभिभावक-संतान संबंध गतिशीलता के बीच जटिल अंतर्संबंध को उजागर करता है। यह पारस्परिक अंतःक्रियाओं पर विक्षिप्तता, बहिर्मुखता, सहमति और कर्तव्यनिष्ठा जैसे लक्षणों के प्रभाव को रेखांकित करता है। इसके अलावा, यह आत्म-सम्मान और अभिभावक-संतान संबंधों के पहलुओं, जैसे अंतरंगता, निर्भरता और संघर्षों, के बीच सूक्ष्म संबंध को उजागर करता है। ये अंतर्दृष्टियाँ आत्म-सम्मान को बढ़ावा देने और पारस्परिक संबंधों को बेहतर बनाने के उद्देश्य से चिकित्सीय हस्तक्षेपों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखती हैं, जो सामाजिक समर्थन नेटवर्क, संघर्ष समाधान रणनीतियों और आत्म-सम्मान वृद्धि तकनीकों को लक्षित करने के महत्व का सुझाव देती हैं। कारण संबंधों को स्पष्ट करने और अतिरिक्त कारकों का पता लगाने के लिए प्रयोगात्मक या अनुदैर्ध्य विधियों का उपयोग करते हुए आगे के शोध की आवश्यकता है। कुल मिलाकर, ये निष्कर्ष चिकित्सकों को व्यक्तियों के कल्याण और संबंधपरक संतुष्टि को आकार देने वाली जटिल गतिशीलता को बेहतर ढंग से समझने और संबोधित करने में सक्षम बनाते हैं।

संदर्भ

- [1]. अरेमु, ए. ओ., जॉन, टी. एम., और अकिनोला, ओ. बी. (2016)। किशोरों में पालन-पोषण शैलियों और आत्म-सम्मान के बीच संबंध। भारतीय मनोविज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल।
- [2]. जॉर्जियो, एस. एन., और स्टावरिनिडेस, पी. (2019)। पालन-पोषण और बच्चों की समायोजन समस्याएँ: आत्म-सम्मान की मध्यस्थ भूमिका। स्कूल साइकोलॉजी इंटरनेशनल।
- [3]. हादोरी, एम., और हस्तुति, आर. डी. (2018)। अखंड और तलाकशुदा परिवारों में किशोरों का आत्म-सम्मान: पालन-पोषण की भूमिका। इंडोनेशियाई जर्नल ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी।

- [4]. हैरिस, एम. ए., और गुएनफेल्डर-स्टीगर, ए. ई. (2013)। क्या माता-पिता आत्म-सम्मान को बढ़ावा देते हैं? पालन-पोषण शैली और अभिभावक-बाल संबंधों की गुणवत्ता के प्रभाव का परीक्षण। जर्नल ऑफ चाइल्ड एंड फैमिली स्टडीज।
- [5]. हंटर, एल., और बार्बर, बी. के. (2015)। किशोर विकास में माता-पिता की भूमिका के ज्ञान का विस्तार: आत्म-सम्मान की मध्यस्थ भूमिका। जर्नल ऑफ यूथ एंड एडोलसेंस।
- [6]. कीज़र, आर., और हेल्मरहोर्स्ट, के.ओ.डब्ल्यू. (2018)। माता-किशोरावस्था और पिता-किशोरावस्था के लगाव संबंधों की अनुभूत गुणवत्ता और किशोरों का आत्म-सम्मान। बाल एवं पारिवारिक अध्ययन पत्रिका।
- [7]. केहक्षा, एम., और अखौरी, ए. (2018)। किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता-पिता-बच्चे के संबंधों का प्रभाव। भारतीय स्वास्थ्य एवं कल्याण पत्रिका।
- [8]. क्रुग, ए., और विटचेन, एच.-यू. (2016)। पारिवारिक कार्यप्रणाली किशोरों में माता-पिता के अवसाद और कम आत्म-सम्मान के बीच संबंध को मध्यस्थ करती है। भावात्मक विकारों की पत्रिका।
- [9]. लिम, एच.ए., और यू. एस. (2016)। माता-पिता का भावनात्मक समर्थन और किशोर अवसाद: आत्म-सम्मान और जीवन संतुष्टि की मध्यस्थ भूमिकाएँ। बाल एवं पारिवारिक अध्ययन पत्रिका।
- [10]. लकटोंग, ए., और सैलिसबरी, एल. सी. (2012). थाई किशोरों में अपराध पर माता-पिता, साथियों और स्कूल के लगाव का प्रभाव. जर्नल ऑफ एडोलसेंस.
- [11]. बंडुरा, ए। एट अल। (2001)। आत्म-प्रभावकारिता विश्वास बच्चों की आकांक्षाओं और कैरियर प्रक्षेपवक्र के आकार के रूप में। बाल विकास, वॉल्यूम। 72, 187-206।
- [12]. बेंटले, डी.ए. और अन्य। (1980)। तनाव सहसंबंध और अकादमिक उपलब्धि।
- [13]. बेनाबौ, आर.जे. और टिरोल, जे। (2002)। आत्मविश्वास और व्यक्तिगत प्रेरणा। अर्थशास्त्र का त्रैमासिक जर्नल, वॉल्यूम। 117(3), 871-915.
- [14]. बर्कले, यू.सी. (2003)। मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना: एक परिसर अनिवार्य। छात्र मानसिक स्वास्थ्य को संबोधित करते हुए एक स्थायी अकादमिक सीनेट उपसमिति के लिए प्रस्ताव, अक्टूबर 2003।
- [15]. बेस्ट, जे.डब्ल्यू। (1953)। शिक्षा में अनुसंधान। प्रेंटिस हॉल आईएनसी, एंगल वुड क्लिफ्स, न्यू जर्सी, दूसरा संस्करण। पीपी: 40-41।